E-Learning material prepared by Dr.Abha Jha, Asstt.Prof.&Head, University Dept. of Philosophy, Dr.Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi, Jharkhand.

सत्यता तथा वैधता

Dr.Abha Jha
Asstt.Prof.&Head
Dept. of Philosophy
DSPMU,Ranchi

DR.ABHA JHA

तर्कशास्त्र के वाक्य अर्थात तर्कवाक्य या प्रकथन सत्य या असत्य होते हैं. सत्यता और असत्यता तर्कवाक्य या प्रकथनों की विशेषताएं हैं। किन्तु तर्कवाक्यों से जो युक्तियां बनती हैं उन्हें सत्य या असत्य नहीं कहा जा सकता. तर्कशास्त्र में युक्तियों की विशेषताएं होती हैं- वैधता या अवैधता. युक्तियां वैध या अवैध होती हैं। वैधता और अवैधता निगमनात्मक युक्तियों का गुण है. वही निगमनात्मक युक्ति वैध होती है जिसमें आधार कथनों के सत्य होने पर निष्कर्ष भी अनिवार्य रूप में सत्य हो.इस प्रकार सत्यता और असत्यता कथनों या तर्कवाक्यों का गुण होता है तथा वैधता अवैधता युक्तियों का. किन्तु युक्तियों की वैधता अवैधता कथनों की सत्यता और असत्यता से संबंधित होती हैं.

यहां यह महत्वपूर्ण है कि वैधता अवैधता का प्रश्न सिर्फ निगमनात्मक युक्तियों के सन्दर्भ में होता है तथा निगमनात्मक युक्तियों का आधार वाक्यों अथवा निष्कर्ष की वास्तविक सत्यता और असत्यता से कोई मतलब नहीं होता. वैध निगमनात्मक युक्तियां सिर्फ इस बात से संबंध रखती हैं कि यदि आधार वाक्य सत्य हैं ,अथवा उन्हें सत्य स्वीकार कर लिया जाए, तो निष्कर्ष भी सत्य होगा अथवा निष्कर्ष की सत्यता स्वीकार करना अनिवार्य होगा. इससे स्पष्ट है कि वैसी निगमनात्मक युक्तियां भी वैध होती हैं जिनके आधार वाक्य और निष्कर्ष वास्तविक दृष्टि में असत्य हैं,साथ ही वैसी निगमनात्मक युक्ति अवैध हो सकती हैं जिनके आधार वाक्य और निष्कर्ष वास्तविक दृष्टि में सत्य हैं .

इसे हम तीन प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं-

१. आधार वाक्यों की सत्यता आवश्यक रूप से निष्कर्ष की सत्यता को आपादित करती है.

२. यह संभव नहीं है कि आधार वाक्य सत्य हों और निष्कर्ष असत्य.

३. आधार वाक्य तार्किक रूप से निष्कर्ष को आपादित करते हैं.

इस प्रकार ऐसा संभव है कि-

१. कोई युक्ति वैध हो और उसके सभी तर्कवाक्य भी सत्य हों.

२. कोई युक्ति वैध हो जिसके सभी तर्कवाक्य असत्य हों.

३.कोई युक्ति अवैध हो, पर उसके सभी तर्कवाक्य सत्य हों.

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी युक्ति की वैधता उसके निष्कर्ष की सत्यता की गारंटी नहीं होती. इसी प्रकार निष्कर्ष की असत्यता युक्ति की अवैधता की गारंटी नहीं है. एक ही गारंटी है कि यदि निष्कर्ष असत्य है तो या तो कोई आधार वाक्य असत्य होगा या वह युक्ति अवैध होगी .यदि किसी युक्ति में निष्कर्ष तथा आधार वाक्य भी सत्य है और वह युक्ति भी वैध हो तो उसे हर प्रकार से शुद्ध युक्ति कहा जाता है. उदाहरण के लिए-

सभी भारतीय विद्वान हैं
सभी मनुष्य भारतीय हैं
इसलिए सभी मनुष्य विद्वान हैं|

ऊपर दी हुई युक्ति के सभी कथन असत्य हैं किंतु फिर भी यह युक्ति एक वैध युक्ति है क्योंकि यदि दोनों आधार वाक्यों को सत्य मान लिया जाए तो निष्कर्ष को भी अनिवार्यतः सत्य मानना ही पड़ेगा. एक दूसरी युक्ति का उदाहरण इस प्रकार है;

सभी मनुष्य मरणशील हैं
सभी मनुष्य पशु हैं
इसलिए सभी पशु मरणशील हैं |

DR ABHA JHA

इस युक्ति में वास्तविक दृष्टि से देखा जाए तो तीनों कथन सत्य हैं, किंतु फिर भी यह एक अवैध युक्ति है क्योंकि यहां आधार कथनों की सत्यता से निष्कर्ष की सत्यता अनिवार्यतः नहीं निकलती, अर्थात यदि आधार कथनों को सत्य मान लें तो भी निष्कर्ष को सत्य मानना अनिवार्य नहीं.

तर्कशास्त्र में कथनों की वास्तविक सत्यता असत्यता से संबंध नहीं होता क्योंकि सत्यता और असत्यता की जांच तर्कशास्त्र का लक्ष्य नहीं है. कथनों की वास्तविक सत्यता और असत्यता की जांच विज्ञान का क्षेत्र है. तर्कशास्त्र का मुख्य उद्देश्य वैध और अवैध युक्तियों में भेद करने की विधि बतलाना है अर्थात उसका काम केवल यह देखना है कि किसी युक्ति में आधार वाक्य और निष्कर्ष के बीच एक विशेष प्रकार का संबंध है या नहीं. तर्कशास्त्र युक्तियों के निर्माण संबंधी नियम एवं सिद्धांत हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है जिसके आधार पर युक्तियों की वैधता और अवैधता की जांच की जाती है . इस जांच की मुख्य कसौटी सिर्फ यह है कि किसी भी निगमनात्मक युक्ति में यदि आधार कथनों को सत्य मानने से निष्कर्ष को भी सत्य मानना अनिवार्य हो, तो ऐसी युक्ति वैध होगी और यदि आधार कथनों की सत्यता स्वीकार करने के बावजूद निष्कर्ष की सत्यता स्वीकार करना अनिवार्य नहीं है यानी हम उसे असत्य भी मान सकते हैं, तो फिर वह युक्ति अवैध होगी.

इस प्रकार स्पष्ट है कि सत्यता तथा वैधता दो अलग-अलग अवधारणाएं हैं. वस्तुतः कोई तर्कशास्त्र या कथन सत्य है या असत्य ,यह ऐसा प्रश्न है जिसका संबंध तथ्य या वास्तविकता से होता है. वस्तुतः तर्कवाक्य या प्रकथन अनुभव के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित होते हैं जिन्हें जानना किसी तर्कशास्त्री के लिए संभव नहीं है और यह उसका क्षेत्र भी नहीं है. तर्कशास्त्र केवल इससे सम्बन्ध रखता है कि जिन आधार वाक्यों से निष्कर्ष निर्मित हुआ है वे उस निष्कर्ष के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं या नहीं.

निगमन तर्कशास्त्र का क्षेत्र तर्कों की वैधता अवैधता तक ही है. यदि हम तर्क या अनुमान के द्वारा वास्तविक रूप से सत्य निष्कर्ष प्राप्त करना चाहते हैं तो इसके लिए दो बातें महत्वपूर्ण हैं ;

१- हमारे आधार वाक्य वास्तविक दृष्टि से सत्य हों,

२- हमारा तर्क या अनुमान वैध हो.

DR ABHA JHA

इसमें पहला कार्य विज्ञान का है क्योंकि कथनों की वास्तविक सत्यता और असत्यता का क्षेत्र विज्ञान का ही है तथा दूसरा कार्य तर्कशास्त्र के क्षेत्र के अंतर्गत आता है. तर्क के द्वारा वास्तविक रूप से सत्य निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम वास्तविक रूप से सत्य आधार कथनों को ही लें तथा वैधता के नियमों अथवा सिद्धांतों का पालन करते हुए निष्कर्ष निकाले. तभी हमारा निष्कर्ष वास्तविक रूप में सत्य होगा और वह एक वैध निष्कर्ष भी होगा.

.....

DR ABHA JHA